नाथ पंथ और बालकनाथ का ऐतिहासिक–सामाजिक अवदान

डॉ. शकुंतला देवी राणा
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय महाविद्यालय,
बंगाणा, जिला ऊना (हिमाचल प्रदेश)

भारत में प्राचीन काल से ही धार्मिक इतिहास को महत्त्व दिया गया जबकि इसके बनिस्पत यूरोप में राजनैतिक इतिहास को तरजीह दी गई। धार्मिक इतिहास में हम समय रेखा की पालना पर जोर नहीं देते, इसके उलट हम कार्य, सिद्धान्त और उपलब्धि पर विचार करते रहे हैं। इस क्रम में देखा जाए तो लगभग 200 ई. से लेकर 1200 ई. तक का काल भारत में पौराणिक–आगमिक–तांत्रिक युग के नाम से कहला सकता है। इस दीर्घावधि में यहाँ पुराण, आगम एवं तंत्रों की रचनाएँ हुई। इस काल के सम्प्रदायों में पाशुपत, भागवत, पाषण्ड, अर्हत, जैन, बौद्ध, भैरव, भिक्षु, शाक्य, सांख्यक, भोजक, चार्वाक, त्रिशूलधारी, सौगत, डामर, कापालिक, लांगल, लिंगधारी, नास्तिक, निर्ग्रन्थ, पाँचरात्र, शैव, वैष्णव आदि के नाम गिनाए जा सकते हैं।

इसी युग में योगमार्गियों ने शैव मत को अपनाकर अपनी नयी पहचान स्थापित की। इस काल में योगियों ने प्राणायाम या प्राण साधना के साथ अपना दार्शनिक सिद्धान्त सामने रखा। इन योगियों के सम्प्रदाय को नाथ सम्प्रदाय कहा गया। इन्होंने शिव को आदिनाथ के रूप में स्थान देकर वाक् या शब्द को महत्त्व दिया। गुरु गोरखनाथ इस सम्प्रदाय के प्रमुख योगी हैं। जिन्होंने इस सम्प्रदाय को संगठित और सुव्यवस्थित किया। इन्होंने पेशावर से लेकर आसाम तक एवं कश्मीर व नेपाल से लेकर महाराष्ट्र तक की यात्राएँ कर इस सम्प्रदाय के केन्द्र स्थापित किए। इनकी स्थापित 12 शाखाओं सहित नवनाथ प्रसिद्ध हैं। "महात्मा बुद्ध के बाद भारत में सामाजिक पुनर्जागरण का शंखनाद महायोगी गोरखनाथ ने किया। महायोगी गोरखनाथ ऐतिहासिक युग में भारतीय इतिहास के पहले तपस्वी हैं, जिन्होंने विशुद्ध योगी एवं तपस्वी होते हुए भी सामाजिक–राष्ट्रीय चेतना का नेतृत्व किया।"[1] नाथ पंथ ने भारतीय जनजीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया। भक्ति आंदोलन को भी यहीं से बीज मिले। हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं– "भक्तिकाल के पूर्व निस्संदेह यह (नाथ पंथ) सबसे प्रबल मतवाद था। इसलिए भक्तिकाल में इनके शब्द और मुहावरे ही नहीं, इनकी पद्धति भी बहुत कुछ आ गई।"[2]

नाथों के साथ ही सिद्धों की भी एक परम्परा चल रही थी। ये 84 थे। सिद्ध वाममार्ग द्वारा साधना कर संसार सागर से पार जाने की बात कहते थे। इसके विपरीत नाथ संयम और सदाचरण पर बल देते रहे। सिद्धों के महासुखवाद के विरोध में नाथ पंथ का उदय हुआ।

नाथ सिद्धों से ही निकले, अतः सिद्धों की कई मान्यताएँ नाथों में समान है। बौद्ध तांत्रिकों के लिए सिद्ध एवं शैव योगियों के लिए 'नाथ' शब्द प्रचलित हुआ। इसी सिद्ध नाथ परम्परा के साधक हुए बालक नाथ। उन्हें सिद्ध परम्परा में भी माना जाता है और नाथ परम्परा में भी। वे अवधूत मत के भी कहे जाते हैं। उन्हें भी गोरखनाथ की तरह शिव का अवतार माना जाता है। वे 15वीं शताब्दी में भारत के उत्तरी खंड में अवतरित हुए। इनकी अलग–अलग युगों में अवतार की बात कही जाती

है। सतयुग में 'स्कन्द', त्रेतायुग में 'कौल' और द्वापर युग में ये 'महाकौल' रूप में अवतरित हुए। सिद्ध की पदवी पाने के लिए इस युग में साधना की। ये प्रारम्भ में सिद्ध रहे होंगे तथा बाद में नाथ बन गए होंगे, जैसे मत्स्येन्द्रपा, गोरक्षपा आदि सिद्ध बाद में मच्छेंद्र नाथ, गोरखनाथ आदि नामों के साथ नाथ पंथ में आ गए। सिद्ध बाबा बालकनाथ के नाम के साथ सिद्ध और नाथ दोनों उपाधियाँ जुड़ी हैं। इनका बचपन में नाम 'देव' था और परम सिद्धि के लिए उन्होंने घर छोड़ दिया। ''गिरनार की पहाड़ी में उनका सामना 'स्वामी दत्तात्रेय' से हुआ और यहीं पर बाबाजी ने स्वामी दत्तात्रेय से 'सिद्ध' की बुनियादी शिक्षा ग्रहण की और 'सिद्ध' बने। तभी से उन्हें 'बाबा बालकनाथ जी' कहा जाने लगा।''[3]

बाबा बालकनाथ का पूजनीय स्थल अब 'दियोट सिद्ध' के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर हिमाचल प्रदेश के हम्मीरपुर जिले के चकमोह गाँव की पहाड़ी के उच्च शिखर पर स्थित है। हिमाचल प्रदेश के कई क्षेत्र बालकनाथ से जुड़े हुए हैं। इसी मंदिर से लगभग छह किमी आगे एक स्थान 'शाहतलाई' नाम से है, जहाँ पर बाबा जी ध्यानयोग किया करते थे। इसी प्रकार एक स्थान 'बड़सर' है, जहां के पुलिस थाने में उन गायों को रखा गया था, जिन्होंने फ़सल खराबकर दी थी। इन गायों को चराने का जिम्मा बाबाजी पर ही था। उनके मंदिर के पास ही प्राकृतिक गुफा है, जो उनका निवास स्थान था। आज वहां पर भक्त रोट अर्थात बड़ी रोटी चढाते हैं। महिलाएँ इस स्थान का दर्शन दूर से ही कर सकती हैं। कुछ लोग यहां बकरा भी चढाते हैं, जिसकी बलि नहीं दी जाती। इस प्रकार ये स्थान और घटनाएँ उनकी ऐतिासिकता से जुड़ी हैं, जो कथा और किंवदंतियों में होते हुए चमत्कार तक पहुँच जाती है। उनका पालन करने वाली 'रत्नों के डांटने पर पेड़ के तने से रोटी और जमीन से छाछ उत्पन्न कर देना, गोरखनाथ द्वारा उन्हें शिष्य बनाने के हठपूर्वक आग्रह पर उनका मोर बनकर उड़ना, अंतिम समय में अपनी प्राकृतिक गुफा में अंतर्धान होना आदि कथाएँ जनमानस पूर्ण श्रद्धा भाव से स्वीकार करता है।

बालकनाथ की शिक्षाएँ जन सामान्य के लिए उत्थान के लिए है। अन्य नाथों की तरह वे भी सदाचरण पर बल देते हैं। उनका मानना था कि जीवन में हर व्यक्ति को नियंत्रित व्यवहार पर जोर देना चाहिए। उन्होंने अपने जीवन की साधना से भी लोगों को शिक्षित किया। वे तप, त्याग, सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य की प्रतिमा थे। दृढ निश्चय और दृढ विश्वास पर चलकर उन्होंने एक आदर्श की स्थापना की। वे मानवकल्याण के भाव से जीवन भर साधना में लगे रहे। उन्होंने गृहस्थ जीवन जीने वालों के सामने सामान्य नियम रखे। उन्होंने सामान्य व्यक्ति के जीवन को सुखी और संतोषमय बनाने का प्रयास किया। यही कारण रहा कि सामान्य मध्यम वर्ग उनका अनुयायी बना। उनके पास दूर–दूर से त्रस्त–दुखी जन आकर कष्टमुक्त होने लगा। उत्तर भारतीय राज्य हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, दिल्ली, राजस्थान आदि में लोग उनके प्रति आस्था रखते हैं।

बाबा बालकनाथ से जुड़ी कई भ्रांतियाँ भी समय के साथ जनमानस में व्याप्त हो गई हैं। जैसे बालकनाथ और गोरखनाथ की कोई जंग हुई थी। जबकि वास्तव में इन दोनों की मुलाकात हुई थी। बाबा बालकनाथ ने गुरु गोरखनाथ के प्रति कोई अवज्ञा की होगी, ऐसा नहीं जान पड़ता। यह भी नहीं मिलता कि बालकनाथ ने गुरु गोरखनाथ का शिष्यत्व ग्रहण किया था। पर जंग या लड़ाई जैसी बात केवल भ्राँति ही है। इसके साथ एक बात उठती है कि बालकनाथ सिद्ध हैं या नाथ। लोग अपने–अपने हिसाब से उसे ग्रहण कर रहे हैं। 84 सिद्धों में बालकनाथ का नाम मिलना बताया जाता रहा है। शोधार्थी तृप्ता संख्यान का इस सम्बन्ध में कहना है– ''बाबा बालकनाथ के नाम में नाथ शब्द जुड़ा देखकर कुछ लोग बाबाजी को भी नाथ पंथी सिद्ध मानने का भ्रम रखते हैं, किन्तु बाबा बालकनाथ ना ही किसी नाथ पंथ से दीक्षित थे और ना ही नौ नाथों और 84 सिद्धों में

बाबा बालकनाथ उल्लेख मिलता है।''[4] कह सकते हैं बाबा बालकनाथ की साधना पद्धतियाँ उन्हें अवधूत बताती हैं। अतः उन्हें नाथ या सिद्ध परम्परा के बजाय अवधूत परम्परा का साधक कहना ठीक होगा।

समाज के लिए साधकों की जरूरत सर्वदा रहती है, जो अनैतिकता, अपराध व आडम्बरों से घिरे समाज जीवन को समय–समय पर दिशा दिखा सके। समाज जीवन को सुखी एवं कल्याणमयी बनाने के साथ संयम व सदाचरण की सीख देने में बाबा बालकनाथ का महत्त्व अक्षुण्ण है। उनकी शिक्षाओं में हिंसा, मूर्तिपूजा, कर्मकांड, बाह्यचारों, अहमकर, मद्य–मांसाहार आदि का विरोध मिलता है तथा शारीरिक, मानसिक शुद्धि, योग, धैर्य, इंद्रिय निग्रह, प्राण साधना एवं संतोष जैसे तत्त्वों का महत्त्व प्रतिपादित है।

स्पष्ट है बाबा बालकनाथ के सिद्ध या नाथ होने, गोरख से जंग होने या शिष्यत्व ग्रहण करने जैसे विषयों पर विवाद हो सकता है पर उनकी देन महत्त्वपूर्ण है। वे लोकनायक, लोक संग्रही थे। लोकभाषा में अपने उपदेशों को दिया और मध्यकाल के समाज जीवन को नयी ऊर्जा दी।

संदर्भ संकेत :–

1. डॉ. प्रदीप कुमार राव – नाथ पंथ, महायोगी गुरु गोरखनाथ, शोध पीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, 2019 ई., पृष्ठ–17
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कथन उद्धृत उपर्युक्त, पृष्ठ–20
3. बाबा बालकनाथ, hi.m.wikipedia.org
4. तृप्ता संख्यान– सिद्धनाथ परम्परा में सिद्ध योगी बाबा बालकनाथ की उपासना एवं योग, सिद्धयोग ग्रंथ, पृष्ठ–201